International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

किन्नर जीवन - संघर्ष का अंतर्नाद करता आत्मचरित :पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन

डॉ.गीता संतोष यादव

सहयोगी प्राध्यापिका, एस.एम्.आर.के.महिला, महाविद्यालय, नाशिक.-४२२००५

शोध संकेत(Abstract) :

आत्मचरित परिभाषा: किसी लेखक द्वारा दूसरे व्यक्ति के जीवन कथा का चित्रण आत्मकथात्मक शैली में करनेवाली विधा को आत्मचरित कहेंगे| उदाहरण स्वरूप श्री राम के जीवनचरित का उद्घाटन गोस्वामी तुलसी ने रामचरित में किया है| उसी प्रकार वर्तमान समय में किन्नर साहित्य की दो पुस्तकें सामने आई हैं| जिसे आत्मचरित का दर्जा दिया जा सकता है | **"मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी"** तथा **"पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन"**इस विधा के अंतर्गत आनेवाली महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं|इन पुस्तकों को अबतक आत्मकथा की श्रेणी में रखा जाता था |लेकिन मेरा मानना है कि इन पुस्तकों में लेखकों की स्वयं अनुभूति तो है,किन्तु,इसे शब्दांकन करने का काम अन्य लेखकों ने किया है। इसलिए मेरे मतानुसार इस प्रकार की शैली में लिखित रचनाओं की गणना आत्मचरित विधा के अंदर की जानी चाहिए| जिसका सर्वथा एक स्वतंत्र विधा के रूप मे उल्लेख होना चाहिए।**'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन'** प्रथम ट्रांसजेंडर प्राचार्या की संघर्ष गाथा है|अपनी असल पहचान स्थापित करने की एक ट्रांसजेंडर के साहसपूर्ण संघर्ष की अद्भुत जीवन-यात्रा जो 23 सितम्बर, 1964 में शुरू होती है|उनके जीवन संघर्षों का चित्रण है, जब दो बेटियों के बाद चित्तरंजन बंद्योपाध्याय के घर बेटा पैदा हुआ। बेटे सोमनाथ के जन्म के साथ ही पिता के भाग्य ने बेहतरी की ओर तेज़ी से ऐसा कदम बढ़ाया कि लोग हँसते हुए कहते कि अक्सर बेटियाँ पिता के लिए सौभाग्य लाती हैं लेकिन इस बार तो बेटा किस्मत वाला साबित हुआ। वे कहते, **'चित्त यह पुत्र तो देवी लक्ष्मी है।'**[२] सोमनाथ जैसे-जैसे बड़ा होता गया उसमें लड़कियों जैसी हरकतें, भावनाएँ पैदा होने लगीं और लाख कोशिश करने के बाद भी रुक या दब नहीं सकीं।

बिना माँ-बाप को बताये वह घर छोड़ कर निकल पड़ा-नारी बनने के लिए। कहाँ, कैसे वह नर से नारी बना, सोमनाथ से मानोबी बन पीएच.डी. तक उच्चतम शिक्षा पाई और २०१५ को पश्चिम बंगाल के कृशनगर महिला कॉलेज की प्रिंसिपल बन ऐसी मिसाल कायम की है जो हर ट्रांसजेंडर के लिए प्रेरणा स्रोत है।इन सबके बीच घटित संघर्षपूर्ण स्थितिओं का चित्रण परस्तुत शोध-आलोख में किया जाएगा|

कुंजी शब्द (Key Words): 'पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन', नोबी,सोमनाथ,किन्नर,प्रिंसिपल,ट्रांसजेंडर,देबाशीष,मीठा चावल,मामा आदि|

प्रस्तावना:

आलोच्य आत्मचरित **'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन'** में लेखिका मानोबी बंदोपाध्याय लिखती हैं यह "उन सबके नाम, जिन्होंने मुझे अपमानित किया और अवमानव कह कर जीवन के हाशिये पर धकेल दिया। उन्हीं के कारण मुझे लड़ने की ताकत मिली और मैं जीवन में आगे बढ़ पायी| आशा करती हूँ कि, यह पुस्तक मुझ जैसों के लिए प्रेरणात्मक सिद्ध होगी और वे भी जीवन में सफल हो पायेंगे|"२

कितनी बार ऐसा हुआ है कि आपकी गाड़ी लाल बत्ती पर रुकी है और कार की खिड़की के बाहर से, भीख माँगते हिजड़े को देख कर अपने मुँह मोड़ लिया है? क्या आपको बहुत घृणा महसूस हुई? क्या यह स्थिति उस अनुभूति से बदतर नहीं लगी जो आप गोद में बच्चा लिए किसी भिखारिन को भीख माँगते देख कर महसूस करते हैं? क्यों ? मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा क्यों है ? आप हिजड़े से घृणा करते हैं क्योंकि आप उसके लिंग के साथ कोई पहचान नहीं जोड़ पाते। आप उसे एक विचित्र, घृणित जीव, संभवता एक अपराधी और निश्चित तौर पर एक अवमानव समझते हैं।

मैं भी उनमें से एक हूँ। मुझे सारा जीवन लोगों के मुख से हिजड़ा,बृहन्नलला, नपुंसक, खोजा, लौंडा... जैसे शब्द सुनने पड़े हैं और मैंने जीवन के के इतने वर्ष यह जानते हुए बिताये हैं कि मैं एक जातिच्युत व परित्यक्त हूँ| क्या इससे मुझे पीड़ा का अनुभव हुआ? हुआ और इसने मुझे बुरी तरह आहत किया है। परन्तु चलन से बाहर हो चुके मुहावरे का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि समय बड़े-बड़े घाव भर देता है। मेरे मामले में इस कहावत ने थोड़ा-सा अलग तरह से अपना प्रभाव दिखाया है। कष्ट तो अब भी है पर समय के साथ-साथ दर्द घट गया है। यह मेरे जीवन के एकान्त क्षणों मुझे आ घेरता है, जब मैं अपने अस्तित्व सम्बन्धी यथार्थ से जूझ रही होती कौन हूँ| मैं कौन हूँ और मैं एक पुरुष की देह में कैद स्त्री के रूप में क्यों जन्मी?मेरी नियति क्या है ?मेरे इस रंग-बिरंगे बाहरी आवरण के नीचे, शर्मसार व् चोटिल वैक्तिकता छिपी है जो आजाद होने के लिए तरस रही है-अपनी शर्तों पर जीवन जीने की आजादी और जो मैं हूँ,उसी रूप में रहने की आजादी! मैं अपने लिए यही आजादी और स्वीकृति चाहती हूँ। मेरा बाहरी कठोर रूप तथा उदासीनता ऐसा कवच है जिसे मैंने अपनी संवेदनशीलता को जीवित रखने के लिए पहनना सीखा है। आज, अपने सौभाग्य के बल पर, मैंने ऐसी अद्भुत सफलता अर्जित कर ली है जो प्रायः मेरे जैसे लोगों के लिए नहीं होती। लेकिन यदि मेरा सफ़र कुछ और हुआ होता? मानोबी कहती हैं मैं अपने आप से बारम्बार कहती कि, अब मेरे लिए समय आ गया है कि मैं इस ख्याति के बीच प्रसन्न रहूँ परन्तु भीतर-ही-भीतर कोई चेतावनी देता है। मेरी अन्तरात्मा मुझसे कहती है कि मुझे अपने आस- पास जो शोहरत और उत्सव दिखाई देता है, वह सब 'माया' है और मुझे एक संन्यासी के वीतराग की तरह ही इस प्रशंसा को ग्रहण करना चाहिए।

मीडिया का कहना है कि कोई ट्रांसजेंडर पहली बार कॉलेज के प्रिंसीपल पद पर नियुक्त हुई, जो अपने-आप में एक उल्लेखनीय कदम है। तब से मानोबी के फ़ोन लगातार घनघनाते हैं, उनकी डेस्क पर अलग-अलग स्थानों पर होने वाले बधाई कार्यक्रमों के न्यौतों के अम्बार लगे रहते हैं। उन्हें यह मान कर बहुत खुशी होती है कि जो लोग उनका अभिनन्दन करते हैं, उन्होंने उन्हें उसी रूप में स्वीकार किया है, जो लेखिका खुद हैं, परन्तु वे उन खी-खी करते सुरों, तिरस्कार और दबी हँसी को कैसे अनसुना कर सकती थीं, जो छिपाने की कोशिश करने पर भी नहीं छिपती ? उनके लिए मानोबी एक 'तमाशा' भर हैं और बिना पैसों का कोई तमाशा देखने को मिल रहा हो तो कौन नहीं देखना चाहेगा? मानसिक आघात और क्रोध, ये दो ऐसे भाव हैं जिन्हें उन्होंने दबाना और नजरअन्दाज करना सीखा है। ये उनके मानसिक कवच का हिस्सा

हैं, जिनसे वे अपने आप को महफूज़ रख पाती हैं।मनोबी ने अन्ततः इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि उनकी उपलब्धियों का उनके आस-पास के लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्हें अब भी लगता है कि मैं आज भी नपुंसक हूँ और यही मेरी असली पहचान है। उन्हें भावुक होने का अधिकार भी है, यह विचार अधिकतर लोगों को अनचीन्हा लगता है।मानोबी उन्हें दोष नहीं देती।वे स्वयं को दोषी मानती हैं, कि उन्होंने ऐसी पीड़ा को नजरअन्दाज़ क्यों नहीं किया। उन्हें तो बहुत पहले उनकी परवाह करनी छोड़ देनी चाहिए थी।ऐसा नहीं कि जीवन के इक्यावन वर्षों के दौरान, मानोबी को अपने हिस्से का प्यार नहीं मिला। कई बार उनका दिल भी टूटा, पर हर बार उन्हें एक नया सबक सीखने का अवसर मिला। उन्होंने बहुत अच्छी तरह और गहराई से प्यार किया और वे आशा करती हैं कि उनके साथी जहाँ भी हैं, वे चुपचाप उनके उस रूप को याद करते होंगे। यह और बात है कि सम्बन्ध कभी उनके लिए कारगर नहीं हो सके। जिन्होंने मानोबी को प्रेम किया, वे सदा उन्हें छोड़ कर चले गये और हर बार जैसे उनका कुछ हिस्सा भी, उनके संग कहीं खो गया।आज जब मानोबी अपनी कहानी लिखने बैठती हैं तो जैसे यादों का रेला उमड़ आता है। मानोबी ने इस विश्वास के साथ यह सब लिखा है कि इस तरह समाज,उन जैसे लोगों को बेहतर तरीके से समझ सकेगा। वे बाहरी तौर पर दिखने में भले ही थोड़े अलग लगें, पर आम आदमी की तरह ही वे इन्सान हैं और आप सबकी तरह ही-शारीरिक और भावात्मक जरूरतें रखते हैं| स्कूल के अध्यापन और जे.यू. में एम.फिल् के बावजूद, मानोबी अपनी रचनात्मक गतिविधियों को और गंभीरता से आरम्भ करना चाहती थी| इसलिए उन्होंने घर में डांस और थियेटर के लिए एक ग्रुप बना लिया। उन्होंने इसे अर्द्धनारीश्वर नाट्य संस्था का नाम दिया|पुरुष व प्रकृति का सामंजस्य, जिसे प्रकृति ने हर मनुष्य के भीतर बहुत ही परिष्कृत रूप में सन्तुलित किया है। सम्भवतः उनके अपने इस मध्यम अस्तित्व ने, नाम को चुनने में अहम भूमिका निभाई। मानोबी का अपने ट्रांसजेंडर साथियों से भी काफी अच्छा व्यवहार था|उन साथियों में जगदीश भी एक था|वह हर पल मानोबी के साथ रहना चाहती |जब मानोबी अपने छात्रों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रक्टिस करती जगदीश अचानक वहीं आकर नाचने व अभिनय करने लगती। अक्सर यह काम में बाधा लगता और कभी-कभार माहौल हल्का भी हो जाता पर धीरे-धीरे मेरे ग्रुप के सदस्य उसके आने से चिढ़ने लगे।मानोबी गंभीर रंगमंच के साथ-साथ, उस समय के प्रायोगिक भावों पर काम कर रही थी। जगदीश के पास हमारी बातें समझने की अक्ल नहीं थी। फिर मानोबी के ग्रुप ने खुलकर उसकी मौजूदगी पर रोष जताना प्रकट कर दिया। हालाँकि कोशिश पर जल्दी ही जगदीश को यह बात समझ आ गयी और उसके बाद वह रिहर्सलों के दौरान उस जगह से दूर रहने लगी।मानोबी की निकटता के बावजूद, जगदीश के मन में उनके लिए नकारात्मक भाव आने लगे थे। दरअसल मानोबी के समूह दोनों के अलग-अलग तौर-तरीकों को इसका दोषी ठहराया जा सकता था। उसे यह बात हजम नहीं होती थी जहाँ उसकी अपनी एक दुनिया थी जिसमें मानोबी दोनों लिंगों के लोगों के साथ बौद्धिक तौर पर मेलजोल रखती थी। मानोबी को धीरे-धीरे अखबारों में छपने वाले लेखों से पहचान मिलने लगी थी और नेहाटी के कई जाने-माने लोग उन्हें मानने लगे थे। वे उनकी अक्षमता के बावजूद, उनके प्रति संजीदा हो गये थे। जगदीश को लगा कि चूँकि उसकी और मेरी लैंगिक पहचान एक सी थी इसलिए हम जीवन जीते थे, उसे भी एक जैसा होना चाहिए था हम दोनों को। दायरे में घूमते हुए, एक जैसे अनुभव ही होने चाहिए थे। शारीरिक सुख यौन इच्छाओं ने उसकी अस्तित्व सम्बन्धी सीमाओं को धुंधला कर दिए और वह इस बात का उपहास करती कि, मैं सेक्स के पीछे दीवानी नहीं मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि हर समय सेक्स के अलावा भी जीवन में करने के लिए बहुत है। पर उसे यह बात पसन्द नहीं आयी। धीरे-धीरे, उसकी कड़वाहट बढ़ने से लगी, हालाँकि उसने यह नाता नहीं तोड़ा क्योंकि

उसे लगता था कि मेरी वजह से उसे एक सामाजिक स्वीकृति मिली हुई थी|जो अन्यथा सम्भव नहीं थी।नैहाटी के वांछित युवा मेरी ओर आकर्षित थे। वे मुझसे दोस्ती करना चाहते और मानोबी भी स्वाभाविक तौर पर उनकी इस बेचैनी का आनन्द दूसरी नवयुवती जैसे उठाती। जगदीश ने उनका ध्यान अपनी ओर खास चाहा पर उसके पास शिष्टाचार और संस्कारों का अभाव था। तभी वे पुरूष उससे दूर छिटक जाते। यह देखकर वह अक्सर लोगों से कहती, "तुम लोग सोमनाथ दा को इसलिए इतना सम्मान देते हो क्योंकि वह स्कूल टीचर है कभी जाकर देखा है कि, कुछ पढ़ाता- वढ़ाता है या चपरासी ही लगा हुआ है। मुझे तो पूरा यकीन है कि सोमनाथ दा फ़ाइलों को इधर से उधर ले जाने व स्टाॅफ रूम का पानी का कूलर भरने का काम ही करता होगा।"[३] जब कोई युक्ति काम नहीं आयी तो उसने मेरे पुरुष मित्रों को धमकाना भी चाहा। उसकी कुंठा को मानोबी समझ सकती थी, इसलिए उस पर तरस आता था।जगदीश ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि वह मानोबी के किसी दोस्त या साथी के प्रेम में थी, दरअसल उसे यह घमंड था कि वह किसी भी पुरुष को भेड़ा बना कर बाँध सकती थी। उसे प्रेम शब्द में यकीन ही नहीं था। उसे लगत था कि प्रेम सेक्स की राह में बाधा बनता है। वह मुझे कहती, "अगर किस से प्रेम करोगे तो कमजोर हो जाओगे और उस इन्सान को कभी अपने वश में नहीं कर सकोगे|[४]
सोमनाथ से बनी मानोबी को एक नयी पहचान मिलने लगी थी और नौहाटी के कई जाने-माने लोग उन्हें मानते थे। वे उनकी अक्षमता के बावजूद,उनके प्रति संजीदा हो गये थे। जगदीश को लगता कि चूँकि उसकी और मानोबी की लैंगिक पहचान एक सी थी इसलिए हम जो जीवन जीते थे, उसे भी उनमें से एक जैसा होना चाहिए था| मानोबी के जीवन में निरंतर एक से एक बधाएं आती रहती| टीचर से लेकर प्राध्यापक, प्राध्यापक से प्राचार्या बनने तक का उनका सफर बहुत ही संघर्षमय रहा है| अपनी अनुभूतियों को साझा करती हुई वे लिखवाती हैं कि-जब भी मैं किसी परेशानी में पड़ती, तो दूसरे टीचर मेरे खिलाफ़ जो साजिश रचते थे, उससे आग में ईंधन पड़ जाता। मैं अपनी ओर से ऐसी सभी सम्भावनाओं से यथासम्भव दूर रहने की चेष्टा करती किन्तु कई बार कुछ बातें हाथ से निकल जाती थीं। 'एक बार,मानोबी को पश्चिमी मिदनापुर के साबांग कॉलेज में अपने छात्रों के साथ जाना था, जो एनएसएस कैंप में हिस्सा ले रहे थे। वहीं उनके साथ कुछ अन्य टीचर भी थे।मानोबी के दल में एक लड़की थी जिसे अचानक माहवारी होने लगी। वह अपने साथ सैनिटरी नैपकिन नहीं लाई थी और वह उनके पास मदद माँगने आ गयी। हालाँकि मनोबी अब भी शारीरिक रूप से पुरुष थी पर उनके अधिकतर छात्रों को यकीन था कि वे अपना सेक्स बदलवा चुकी हैं और लड़कियाँ अक्सर उनपर भरोसा करके अपने मन की बात करतीं। वह लड़की मेरे पास आकर बोली कि क्या मैं उसे कॉलेज प्रशासन से सैनिटरी पैड लाकर दे सकती हूँ। मैंने उसकी मदद करने से पहले एक बार भी नहीं सोचा और सीधा ऑफ़िस चली गयी। एक पुरुष टीचर को औपचारिक रूप से, सैनिटरी नैपकिन की माँग करते देख, वे सकते में आ गये और उनका मजाक उड़ाया गया। उनके कॉलेज के दूसरे टीचर्स को और बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया|इसे लोगों ने उनकी बदचलनी कहकर फैला दिया| उन्हें कहा गया कि मैं एक छात्र का यौन शोषण कर रही हूँ। देखते-ही-देखते तमाशा बन गया|[५]इन बातों ने सचमुच जीना दूभर कर दिया था। मानोबी हताश होकर, वहीं कुछ छात्रों के साथ एक कोने में बैठ गयी। किसी ने उन्हें कुछ पीने को दिया और घबराहट में,उन्होंने उसे मुँह से लगा लिया। उसका स्वाद कोल्ड ड्रिंक जैसा था इसलिए वे पी गयी। जल्दी ही सर चकरा कर उल्टी होने लगी और वे बेहोश हो गयी। जब होश आया तो आस-पास की सारी दुनिया चकरा रही थी और आस-पास के लोगों की बातें कानों में पड़ने लगीं।उन पर कैंपस में शराब पीने का आरोप लगाया गया; कुछ लोगों ने उस लड़की पर दबाव डाला, जो उनकी मदद लेने आयी थी। उसे कहा गया, वह सबके सामने कहे कि सोमनाथ(मानोबी)ने उसका यौन शोषण

करना चाहा। शुक्र है, वह लड़की उनके साथ खड़ी रही और उनकी बातों में नहीं आयी| कॉलेज प्रशासन द्वारा बुलाई गयी पुलिस के सामने उस लडकी ने उनपर किसी को सताने का कोई इल्जाम नहीं लगाया| उनके कॉलेज के दूसरे टीचर्स ने, प्रशासन को उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने में मदद की कि ,वे कैंपस में शराब पीकर आयी थी। अन्ततः उन्हें उनका प्रतिशोध मिल गया, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि अब नौकरी उनके हाथ से निकल जायेगी।यह मामला पश्चिम बंगाल कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन तक पहुँचा, पर भगवान उनके साथ था।उनके खिलाफ़ लगाए गये सारे झूठे अभियोग टिक नहीं सके। पर वे इतनी निराश हो गयी थी कि कैंपस छोड़ कर नैहाटी लौट आयी।वे सोच रही थी कि क्या उन्हें अपने कैरियर को भुला कर, यह नौकरी छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि अब उनकी मानसिक शक्ति क्षीण हो चुकी थी। दो बातें ऐसी थीं जिन्होंने उन्हें नौकरी से त्यागपत्र देने से रोका। पहली, उनके माता-पिता के चेहरे के असहाय भाव; जिन्हें अब भी लगता था कि अपने ट्रांसजेंडर अस्तित्व के बावजूद, उनकी सन्तान किसी तरह उनके पालन-पोषण के लिए धनार्जन करती रहेगी। वे उनकी उम्मीदों पर पानी कैसे फेर सकती थी? दूसरे,उनके कॉलेज के प्रिंसीपल ने कहा कि उन्हें तत्काल काम पर वापस आ जाना चाहिए। सोमनाथ उर्फ मानोबी ने उन्हें लिखा कि मुझे उस जगह अपनी जान का खतरा है पर प्रिंसिपल का आग्रह था कि ऐसा भय केवल उनकी कल्पना की उपज है।वे उसी चिन्तित अवस्था में वापस कॉलेज पहुँची, नहीं जानती थी कि आने वाले समय ने उनके लिए क्या तय कर रखा है।

सोमनाथ उर्फ मानोबी के जीवन में कई बार ऐसे दौर भी आये, जब उन्हें अपने चुने हुए रास्ते के लिए संदेह होने लगता। ऐसे प्रसंगों में,उनका दिमाग दुविधा में उलझ जाता और यह संघर्ष उन्हें भीतर-ही-भीतर चीर देता। 'क्या मैं सच में एक स्त्री हूँ जो पुरुष की देह में कैद है या केवल भ्रामक विचार है ? ऐसा क्यों है कि सारा संसार मुझे ऐसा पुरुष मानता है जो एक जनखे से ज्यादा नहीं है?वे घंटों दर्पण के सामने नग्न खड़ी होकर, अपने सामने दिख रही छवि का परीक्षण करती जो उन्हें घूरती दिखाई देती। उन्हें उस पुरुष देह से घृणा थी।वे उस देह से इतना सा भी थोडा नहीं कर पाती थी। उस सपाट देह में कहीं कोई उतार-चढ़ाव नहीं थे।हर बार वे एक ही निष्कर्ष पर आती- यह मैं नहीं हो सकती।उनकी आत्मा और लैंगिकता, दर्पण में दिखने वाली छवि से मेल नहीं खाती थी। वे अपनी उस सम्पूर्ण छवि को पाने के लिए घंटों बिसूरती और जी में आता कि अपना जिस्म फाड़ कर उस पुरुष देह से बाहर निकल जायें, जिसमें उनका जन्म हुआ था। वे जानती थी कि अगर वे लोगों के बीच पुरुषोचित वस्त्र पहन कर वैसा ही आचरण करें तो उन सब अपमानों और छीछालेदर से बच सकती थी, जो उनकी ज़िन्दगी के एक-एक क्षण का अटूट अंग बन गये थे। इसलिए वे खुद को पुरुषोचित दिखाने के लिहाज से सिगरेट पीना आरम्भ कर देती हैं| जादवपुर यूनिवर्सिटी में सिगरेट पीने का लिंग से कोई लेना-देना नहीं था और युवतियाँ भी मर्दों की तरह बेबाक होकर, सिगरेट के कश लेती दिखाई देतीं। परन्तु इस सुदूर झाड़ग्राम में हालात अलग थे।वे किसी महिला के होंठों के बीच सिगरेट की कल्पना भी नहीं कर सकते थे और सिगरेट पीना तो वैसे भी पुरुषों का ही अधिकार और लक्षण माना जाता और उन्होंने सोचा कि अगर सार्वजनिक तौर पर धूम्रपान करूँगी तो हो सकता है कि इससे मुझे कुछ फायदा मिले और मेरे आस-पास के लोग कुछ समय के लिए मुझे परेशान करना बन्द कर दें। उन्हें मर्दों वाले कपड़े पहनने से सख्त नफरत थी पर मानोबी कोशिश की कि, मेकअप को कम-से-कम कर दिया जाये ताकि दिखने में एक मर्द की छवि का आभास हो।पर ऐसा छलावा भी उनके भीतर चल रही उथल-पुथल को शान्त नहीं कर सका। पर वे इसी नतीजे पर आयी कि मैं एक स्त्री हूँ और मुझे किसी भी हाल में, किसी भी दशा में अपने खोल से बाहर आना था। यह उनका संकल्प था और उन्होंने उनके सामने आने वाली हर चुनौती व बाधा का मुँहतोड़ जवाब देने की ठान ली। वे

जानती थी कि, उनके लिए आने वाली जिन्दगी, बीती हुई जिन्दगी की तुलना में और कठिन होने वाली थी। यह भी पता था कि अगर उन्होंने सर्जरी के माध्यम से सेक्स परिवर्तन करवाया तो लोगों की ओर से कड़ी भर्त्सना सहन करनी होगी, क्योंकि समाज अपनी ओर से उन्हें अस्वीकृत करने या दबाने की भरपूर कोशिश करेगा। पर वे अपने संकल्प पर अडिग थी। अगर उन्हें अपनी सच्ची लैंगिक पहचान को स्थापित करने में मौत का भी सामना करना पड़ता, तो वे ऐसा करने को भी तैयार थी। वे सारी दुनिया के साबित करना चाहती थी कि मैं एक स्त्री हूँ और ऐसा करने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थी। जब एक बार उन्होंने अपने मन के साथ समझौता क लिया तो उसके बाद मन शान्त हुआ और वे काफ़ी हद तक सहज हो गयी|

रथीकर जो मानोबी का मित्र था |कोलकाता से अपना डेरा उठाकर मानोबी के पास आकर रहने लगता है ताकि उसके जीवन में सुधार हो । वह घर में छोटे-मोटे काम करता और इसके साथ ही उसने साइकिल मरम्मत की दुकान पर भी काम करना शुरू कर दिया। हालाँकि उसने बधिया नहीं करवाया था पर उसे देख कर भी अंदाजा लगाया जा सकता था कि वह भी ट्रांसजेंडर ही था। उसने अपने से बड़ी उम्र के व्यकि से सम्बन्ध बना लिए और उसे अपना पति मानने लगा। इस प्रकार की भी परम्पराएँ किन्नर समाज में होती हैं|एक दिन, वे दोन कहीं भाग गये और सारे गाँव में हलचल मच गयी। उस व्यक्ति के परिवावालों ने ग्रामीणों को मानोबी के खिलाफ भड़का दिया और कहा कि मानोबी की वजह से ही उनका आदमी घर से भागा| कॉलेज में लगभग सौ लोग मानोबी पर धावा बोलने आ जाते हैं। सभी अध्यापकों को तो जैसे एक सुनहरा अवसर मिल जाता है| वे मानोबी को उस भड़की हुई भीड़ के हाथों सौंपने का निर्णय कर देते हैं आज भी उन्हें अच्छी तरह याद है, किस तरह मानोबी ने पिछले गेट से चुपके से भाग कर अपनी जान बचाई थी। मानोबी सीधा बस स्टैंड पर भागी और झाडग्राम से दूर ले जाने वाली किसी बस में बैठ कर ही साँस ली। नैहाटी आ गयी कुछ सप्ताह वहीं बिताए। कुछ समय तक सारा मामला ठंडा होने के बाद वापस जाने का साहस कर सकी।

सोमनाथ उर्फ मानोबी को अपने स्कूल और कॉलेज के दिनों भी अपने जेंडर को लेकर बहुत आलोचनायें झेल चुके हैं|जब वे शहर में थी, तो अपने जाने-पहचाने दायरे अपनी तरह से जीने मे कोई ख़ास परेशानी नहीं थी|पर उस देहाती परिवेश में वे उनके लिए अजूबा थी|एक अनूठा अजूबा थी और सारे समुदाय के चेहरे पर अजीब से आश्चर्य के भाव देखे जा सकते थे। वे उन्हें खड़े ताकते रहे और जब उन्होंने पिता जी के साथ प्रिंसीपल के कमरे की राह ली ताकि औपचारिक रूप से अपने आने की सूचना दे सकें। कुछ लोग कॉलेज में अपेक्षित शिष्टाचार को भी भुला बैठे और उनके पीठ पीछे फब्तियाँ कसते हुए, चुटकियाँ लेने लगे, "अरे, देखो ! देखो ! बेटा न बेटी, ऐ कि गो बोते ?" (देखो, देखो, ये कौन है? मर्द है या औरत?)[७] कॉलेज और बस स्टैंड के बीच पैदल रास्ते के दौरान भी वे ऐसी ही फुसफुसाहटों और दबी खिलखिलाहटों के सुर सुनते आये थे। वे कोलकाता में जो भाषा बोलते, उनकी देहाती बोली और टोन उससे बहुत अलग थी और उनके वे स्वर मानोबी की देह पर किसी कोड़े की तरह वार करते थे। वे बुरी तरह से घबरा गयी। रेलगाड़ी में जिस रोमानी एहसास ने मेरे आस-पास एक जादुई जाल बुनना शुरू किया था, वह अचानक ओझल हो गया और वे जान गयी कि वे एक बार फिर से उलझ गयी हैं।उन्होंने हर कोने से झाँकते टीचर्स व बच्चों को देखा और उनकी हँसी मानोबी का पीछा करने लगी। अचानक उनके जी में आया कि वे बस से मुड़कर भागना शुरू कर दें और कॉलेज से बाहर निकल जायें।इसके अलावा सोमनाथ उर्फ मानोबी अपने अनेक प्रेम-प्रसंगों पर धोखा खा चुकी हैं|लेकिन इस शोध-आलेख में उन सब पर प्रकाश डालना संभव नहीं उसके लिए नए शोध-आलेख का लेखन किया जाएगा|

सन्दर्भ :

१) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ (समर्पण से)

२) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८(बैक फ्लैप से)

३) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ पृष्ठ७२

४) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ पृष्ठ७२ -७३

५) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ पृष्ठ९५

६) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ पृष्ठ१०१

७) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन:लेखिका:: मानोबी बंदोपाध्याय:प्रकाशक :राजपाल एन्ड सन्ज :: प्रकाशन वर्ष: प्रथम संस्करण २०१८ पृष्ठ८३